मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध

©2020 marumegh
ISSN:2456-2904

गिलोय :आयुर्वेद मे अमृता

प्रियंका कुमावत[1] एवं गायत्री कुमावत[2]

[1]विद्यावाचस्पति छात्रा,उधान विज्ञान विभाग,कृषि महाविधालय, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविधालय, बीकानेर

[2]विद्यावाचस्पति छात्रा, आनुवांशिकी एव पादप प्रजनन विभाग,श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविधालय, जोबनेर

Corresponding & e-mail priyankasknau@gmail.com

गिलोयजिसे वैज्ञानिक भाषा मे टीनोस्पोरा कार्डीफोलिया कहा जाता है, यह एक बहुवर्षीय लता होती है। इसके पत्तों का आकार पान के पत्तों की तरह होते हैं।इसे कई अन्य नामों से जाना जाता है जैसे अमृता, गुडुची, अर्ध–चन्द्र बीज,छिन्नरुहा, चक्रांगी, आदि। गिलोय भारत, म्यांमार और श्रीलंका के उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों के मूल में पैदा होने वाली एक आयुर्वेदिक औषधि है। गिलोय की पत्तियों में कैल्शियम, प्रोटीन, फॉस्फोरस पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है, इसके अलावा इसके तनों में स्टार्च की भी अच्छी मात्रा होती है। अमृत के समान गुणकारी तथा बहुवर्षीय होने से इसका नाम अमृता है। ज्वर की महान औषधि होने के कारण आयुर्वेद साहित्य में इसे जीवन्तिका नाम दिया गया है। गिलोय की लता जंगलों, खेतों की मेड़ों, पहाड़ों की चट्टानों आदि स्थानों पर सामान्यतः कुण्डलाकार चढ़ती पाई जाती है। गिलोय की बेल जिस वृक्ष पर भी चढ़ती है वहउस वृक्ष के सारे गुण अपने अंदर समाहित कर लेती है नीम के वृक्ष पर चढ़ी गिलोय की बेल में नीम के गुण भी शामिल हो जाते हैं इस लिए नीम गिलोय सर्वोत्तम औषधि होती है। इसका काण्ड छोटी अंगुली से लेकर अंगूठे जितना मोटा होता है। इसके तने से जगह – जगह पर जड़ें निकलकर नीचे की ओर झूलती रहती हैं, यह जड़ें जमीन में घुसकर नयी लताओं को जन्म देती हैं।

बेल के तने की ऊपरी छाल बहुत पतली, भूरे या धूसर रंग की होती है, जिसे हटाने पर अंदर का भाग हरा मांसल दिखाई देता है। काटने पर अन्तर्भाग चक्राकार दिखाई पड़ता है। इसके पत्ते हृदय के आकार के होते है, जो तने पर एकान्तर क्रम में व्यवस्थित होते हैं। इनका व्यास लगभग 2 से 4 इंच तक का होता हैं। इसका पत्र–डण्ठल लगभग 1 से 3 इंच लंबा होता है। इसके फूल छोटे–छोटे पीले रंग के गुच्छों में ग्रीष्म ऋतु में आते हैं तथा फल भी गुच्छों में ही आते हैं। फलो का आकार मटर के समान होता हैं। फलो का रंग पकने पर रक्त के समान लाल हो जाता हैं। बीज सफेद, चिकने, कुछ टेढ़े, मिर्च के दानों के समान होते हैं। उपयोगी अंग तना है।

ताजे तने की छाल हरे रंग की मांसल व गूदेदार होती है। उसकी बाहरी त्वचा हल्के भूरे रंग की होती है तथा पतली, कागज के पत्तों के जैसे छूटती है। तने पर जगह –जगह पर गांठ के समान उभार पाए जाते हैं। सूखे तने के छोटे–बड़े टुकड़े बाजार में पाए जाते हैं, जो बेलनाकार लगभग 1 इंच व्यास के होते हैं। इन पर से छाल काष्ठीय भाग से आसानी से पृथक् की जा सकती है। स्वाद में यह तीखी होती है, पर गंध कोई विशेष नहीं होती। कन्द गुडूची व एक असामी प्रजाति इसकी अन्य जातियों की औषधियाँ हैं, जिनके गुण अलग–अलग होते हैं।

गिलोय मे पाए जाने वाले प्रमुख घटकः गिलोय मे मुख्य एल्कलॉइड और द्वितयक मेटा बोलाइट्स टिनोस्पोरीन, टिनोस्पोराइड, टिनोस्पोरसाइड, कॉर्डिफ़ोलाइड, कॉर्डिफ़ोल, हेप्टाकोसेनोल और टिनोस्पोरिडाइन पाये जाते हैं, जो विषाक्त पदार्थों को हटाने और प्रतिरक्षा प्रणाली में सुधार करने में प्रभावी हैं।

गिलोय के फायदे :

1. गिलोय का उपयोग एनीमिया से राहत दिलाता है गिलोय के पत्तों को घी और शहद के साथ मिलाकर लेने से खून की कमी दूर होती है।
2. पीलिया के मरीजों के लिए गिलोय लेना बहुत ही फायदेमंद है. इसका उपयोग चूर्ण के रूप या पत्तियों को पानी में उबालकर कर सकते है। इसका उपयोग पत्तिपयों को पीसकर शहद के साथ मिलाकर भी किया जा सकता हैं, इससे पीलिया में फायदा होता है और मरीज जल्दी स्वस्थ हो जाता है.

3. गिलोय की पत्तियों को पीसकर उसका पेस्ट तैयार करके उसे सुबह–शाम पैरों और हथेलियों पर लगाने से पैरों व हथेलियों की जलन कम होती है। गिलोय की पत्तियों का काढ़ा भी जलन को कम करने मे फायदा करता है।
4. कान के दर्द में इसका रस फायदा करता है। गिलोय की पत्तिलयों का रस हल्का गुनगुना करके, इसकी एक–दो बूंद कान में डालने से कानका दर्द ठीक हो जाता है।
5. पेट से जुड़ी कई बीमारियों में गिलोय का इस्तेमाल करना फायदेमंद होता है, इससे कब्ज और गैस की समस्या नहीं होती है और पाचन क्रिया भी दुरुस्त रहती है।
6. गिलोय का इस्तेमाल बुखार दूर करने के लिए भी किया जाता है. अगर बहुत दिनों से बुखार है और तापमान कम नहीं हो रहा है तो गिलोय की पत्तियों का काढ़ा पीना फायदेमंद रहेगा।
7. गिलोय मुंह की झुर्रियां और हलकी रेखाओं को कम करते हैं, इसमे बुढापा विरोधी गुण पाया जाता है।
8. गिलोय एक और मुँहासे, एक्जिमा और कुष्ठ रोग जैसी त्वचा की बीमारियों का इलाज करने मे गिलोय का उपयोग किया जाता है, यह डिटोक्सिफाइंग कारक की तरह कार्य करता है।
9. इसमे एंटीऑक्सीडेंट एवं एंटी बैक्टीरियल गुण पाये जाते है जो जिगर और गुर्दों से विषैले पदार्थों को हटाने व मूत्र पथ की समस्याओं से लड़ने में सहायक होते हैं। यह शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली मे सुधार करने का कार्य करता है।
10. गिलोय के रस को मक्खन के साथ मिलाकर लेने से बवासीर से राहत मिलती है।
11. गिलोय मे हाइपोग्लाइकेमिक एजेंट होने के कारण यह रक्तचाप और लिपिड के स्तर को कम करता है, इस लिए इसका उपयोग टाइप 2 डायबिटीज के उपचार मे किया जाता है।
12. गिलोय मे एडाप्टोजेनिक गुण होता है, जिससे इसका उपयोग उच्चस्तरीय तनाव और चिंता हरण करने मे किया जाता है। यह दिमाग को एक सुखद और शांत प्रभाव देने के साथ साथ दिमाग की कोशिकाओं को मुक्त कणों की वजह से हुई क्षति से भी बचाता है।
13. इसमे एंटी इंफ्लेमेटरी और एंटी–पायरेटिक गुण होते हैं जिनका उपयोग जोड़ों के दर्द के इलाज में मदद करते हैं।
14. पानी में गिलोय को उबाल कर, मिश्रण को ठंडा करके आँखों पर चारों और लगाने सेनज़र की स्पष्टता को बढ़ती है, तथा चश्मे से छुटकारा मिलता है।
15. एलर्जिक राइनाइटिस मे गिलोय की टेबलेट्स बहुत प्रभावी होती है।
16. गिलोय के ज्यूस को छाछ के साथ मिलाकर पीने से अपाचन की समस्या दूर होती है।

घावों के उपचार मे गिलोय का उपयोग

एक पैन में गिलॉय की पत्तियों को महीन पीसकर अरंडी या नीमके तेल मे मिलाकर कुछ मिनटों के लिए पकाते है। इस पेस्ट को ठंडा करके घाव पर लगाकर पट्टी से बाँधते है। इससे घाव जल्दी ठीक हो जाता है।

गिलोयका काढ़ा

गिलोय का काढ़ा बनाने के लिए गिलोय की छाल को महीन पीसते है। इसे पानी मे तब तक उबालते है जब तक पानी आधा ना रह जाए। गिलोय की छाल की जगह इसका 1 चम्मच सूखा पाउडर भी इस्तेमाल कर सकते है। बुखार से निजात पाने के लिए इसमे अदरक व तुलसी भी डाली जाती है। इस मिश्रण को छानकर प्रतिदिन 2 समय उपयोग करने से डेगु बुखार से राहत मिलती है।

फसल की खेती और प्रबंधन

प्रवर्धन

बीज द्वारा प्रवर्धन

गिलोय को लगाने काउत्तम समय जून–जुलाई का महीना है। इसका प्रवर्धन बीज से भी किया जा सकता है। बीजको बुवाई से पहले 24 घंटे तक पानी में भिगोया जाता है। यह बीज मई–जुलाई के दौरान पॉलीबैग में बोए जाते हैं। इनका 80–90 प्रतिशत अंकुरण 8–10 दिनों में हो जाता है। अगर बीजों को बिना भिगोय लगाया जाए तो केवल 30–35 प्रतिशत अंकुरण होता है। नर्सरी मे यह पौधा डेढ़ महीने मे तैयार हो जाता है।

कटिंग द्वारा प्रवर्धन

स्टेम कटिंग इस पौधे की सबसे अच्छी प्रवर्धन सामग्री है।इसका प्रवर्धन सेमी हार्ड वुड कटिंग से किया जाता है। इसके लिए जून–जुलाई में 2–4 नोड्स के साथ 6–8 इंच की पेंसिल की मोटाई की सेमी हार्ड वुड कटिंग लगाई जाती है। इसके नीचे वाले हिस्से को IBA @ 2500 ppm मे डुबोकर इसे 4 ×6 इंच आकार के पॉली बैग में लगाया लगाया जाता है। कटिंग तैयार होने मे लगभग 4 से 5 सप्ताह लगते हैं।

मिट्टी और जलवायु

यह लगभग किसी भी प्रकार की मिट्टी में अच्छी तरह से विकसित हो सकती है, हालांकि अच्छी जल निकासी के साथ कार्बनिक पदार्थों से भरपुर हल्की रेतीली दोमट मिट्टी इस फसल के लिए उपयुक्त है। पौधे उष्णकटिबंधीय और उपोष्ण कटिबंधीय स्थितियों में अच्छी तरह से बढ़ता है। यह जलभराव की स्थिति के प्रति संवेदनशील होता है।

रोपण

तैयार कटिंग को खेत मे जून–जुलाई के महीने में खेत में लगाया जाता है। प्रति हेक्टेयर भूमि पर लगभग 2500 तने की कटिंग अच्छी फसल वृद्धि के लिए लगाना उपयुक्त है। उच्च पैदावार के लिए लगाने की दूरी 3• 3 मी रखी जाती है। इसे बढ़ने के लिए सहारे की आवश्यकता होती है। इसको नीम और आम के पेड़ के पास लगाया जा सकता हैं। यह प्रवर्धन का बहुत ही आसान तरीका है। इसकी एक कलमदो साल में खुद को विशालकाय बना लेती है।

भूमि की तैयारी और उर्वरक अनुप्रयोग

वृक्षारोपण से पहले भूमि को जुताई और खरपतवार मुक्त बनाया जाता है। उच्च उपज के लिए खेत मे 10 टन खाद की सिफारिश की जाती है और 75 किलोग्राम नाइट्रोजन खेत मे डालने से अच्छी पैदावार प्राप्त की जा सकती है।

कीटनाशक

इस फसल में कोई गंभीर कीट व बीमारियों की सूचना नहीं है।फिर भी बीमारियों से बचाव के लिए, जैव कीटनाशक नीम (गिरी, बीज और पत्ते), धतूरा, गाय के मूत्र से तैयार किया जा सकता है।

सिंचाई

रोपण के बाद के खेत को समय–समय पर सिंचाई की जानी चाहिए। हालाँकि, यह मुख्य रूप से वर्षा आधारित फसल के रूप में उगाया जाता है।

कटाई / कटाई के बाद का ऑपरेशन

परिपक्व पौधों को इकट्ठा करके इनको छोटे टुकड़ों में काटा जाता है और छाया में सुखाया जाता है। सूखने के बाद छोटे टुकड़ों को पैक करके बाजार मे बेचा जा सकता है। इसे पाउडर बना के भी बेचा जाता है।

उपज

इससे प्रति वर्ष लगभग 10–15 क्विन्टल/ हेक्टेयर उपज प्राप्त की जा सकती है।